हर समस्या का समाधान है महावीर दर्शन

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को भगवान महावीर का जन्म कल्याण है। उनके सिद्धांत बताते हैं कि वर्तमान के वर्तन (व्यवहार) को किस प्रकार से रखा जाए कि जीवन में शांति, मरण में समाधि, परलोक में सद्गति तथा परम्पर से परमगति पाई जा सके। मानवीय गुणों की उपेक्षा के इस समय में महावीर के कल्याण का दिन हमसे अपने जातीय भेद भुलाकर सत्य से साक्षात का संदेश देता है। भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति से लेकर कीकीडे-मकोडे, पशु-पक्षी आदि के प्रति भी उसी मित्रता और अहिंसक विचार के साथ रहने का उपदेश दिया है। उनकी इस शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की सीख भी है। आज जिस हिंसात्मक वातावरण और आपाधापी के बीच बच्चे बढ हो रहे हैं उसके कारण उनमें संयम का अभाव है। यह पीढी लक्ष्य से भटक रही है। ऐसे वातावरण में बडे हो रहे बच्चों से अपेक्षा रखना कि वे नैतिक राह पर चलेंगे ठीक नहीं। आज हमें समग्रता में महावीर की शिक्षाओं की बहुत जरूरत है ताकि हम इस धरा को सुंदर बना सकें।

बढती बुद्धि उन्नत कारोबार यही है बुधवार व्रत का उपहार

क्या आपका मन किसी काम में नहीं लगता क्या बार- बार किसी काम को करने से हतोत्साहित हो जाते हैं। या फिर व्यापार को लेकर आप हमेशा असंतुष्ट रहते हैं। तो इन समस्याओं के छुटकारा पाने के लिए बुधवार का व्रत कर सकते हैं। यह व्रत स्त्री-पुरुष दोनों के लिए ही मंगलदायक होता है। इस व्रत को करने से आपकी बुद्धि में काफी इजाफा हो सकता है।

करें ये उपाय सर्वप्रथम नित्यकर्मों से मुक्त होकर बुध देवता के मंत्र से बुध त्वं बुद्धिजनको बोधद: सर्वदा नृणाम तत्वावबोधं कुरुषे सोमपुत्र नमो नम: ॥ उनका ध्यान करें। घर के इशान कोण में भगवान शिव या बुध का चित्र या मूर्ति कांस्य के बर्तन में स्थापित करना चाहिए। उनपर बेलपत्र, अक्षत, धूप और दीप जलाकर विधिवत पूजा करनी चाहिए। दिन हरे-पीले रंग के शेड वाले कपडे पहनने चाहिए। पन्ना रत्न धारण करना शुभ होता है। व्रत में हरी वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए। मूंग का हलवा, हरे फल, छोटी इलाइची का विशेष महत्व है।

दिन के व्रत की पूर्णाहुति सूर्यास्त के बाद एक बार फिर से बुध को धूप, दीप और गुड, चावल एवं दही के भोग लगाने से होती है।उसके बाद प्रसाद वितरण कर स्वयं भी ग्रहण करना चाहिए। व्रत करने वाले को दिन में एक बार ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। बुधवार का व्रत को विशाखा नक्षत्र में बुधवार के दिन से आरंभ करना चाहिए, जिसे 17 या 21 सप्ताह तक करना चाहिए। इस योग के नहीं मिलने की स्थिति में इस व्रत को किसी भी माह में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से किया जा सकता है। ब्राह्मणों को भोजन करवाकर यथाशक्ति दान देना चाहिए।

बुधवार व्रत की कथा

कहते हैं समतापुर नगर में मधुसूदन नामक एक व्यक्ति रहता था। वह बहुत धनवान था। मधुसूदन का विवाह बलरामपुर नगर की सुंदरलडकी संगीता से हुआ था। एक बार मधुसूदन अपनी पत्नी को लेने बुधवार के दिन बलरामपुर गया। मधुसूदन ने पत्नी के माता-पिता से संगीता को विदा कराने के लिए कहा। माता-पिता बोले- 'बेटा, आज बुधवार है। बुधवार को किसी भी शुभ कार्य के लिए यात्रा नहीं करते।' लेकिन मधुसूदन नहीं माना। उसने ऐसी शुभ-अशुभ की बातों को न मानने की बात कही। दोनों ने बैलगाडी से यात्रा प्रारंभ की।

दो कोस की यात्रा के बाद उसकी गाडी का एक पहिया टूट गया। वहाँ से दोनों ने पैदल ही यात्रा शुरू की। रास्ते में संगीता को प्यास लगी। मधुसूदन उसे एक पेड के नीचे बैठाकर जल लेने चला गया। थोडी देर बाद जब मधुसूदन कहीं से जल लेकर वापस आया तो वह बुरी तरह हैरान हो उठा क्योंकि उसकी पत्नी के पास उसकी ही शक्ल-सूरत का एक दूसरा व्यक्ति बैठा था। संगीता भी मधुसूदन को देखकर हैरान रह गई। वह दोनों में कोई अंतर नहीं कर पाई। मधुसूदन ने उस व्यक्ति से पूछा 'तुम कौन हो और मेरी पत्नी के पास क्यों बैठे हो' मधुसूदन की बात सुनकर उस व्यक्ति ने कहा- 'अरे भाई, यह मेरी पत्नी संगीता है। मैं अपनी पत्नी को ससुराल से विदा करा कर लाया हूँ।

लेकिन तुम कौन हो जो मुझसे ऐसा प्रश्न कर रहे हो' मधुसूदन ने कहा 'तुम जरूर कोई चोर या ठग हो। यह मेरी पत्नी संगीता है। मैं इसे पेड के नीचे बैठाकर जल लेने गया था।' इस पर उस व्यक्ति ने कहा- 'अरे भाई झूठ तो तुम बोल रहे हो। संगीता को प्यास लगने पर जल लेने तो मैं गया था। मैंने तो जल लाकर अपनी पत्नी को पिला भी दिया है। अब तुम चुपचाप यहाँ से चलते बनो। नहीं तो किसी सिपाही को बुलाकर तुम्हें पकडवा दूंगा।' दोनों एक-दूसरे से लडने लगे। उन्हें लडते देख बहुत से लोग वहाँ एकत्र हो गए। नगर के कुछ सिपाही भी वहाँ आ गए। सिपाही उन दोनों को पकडकर राजा के पास ले गए। सारी कहानी सुनकर राजा भी कोई निर्णय नहीं कर पाया। संगीता भी उन दोनों में से अपने वास्तविक पति को नहीं पहचान पा रही थी। राजा ने दोनों को कारागार में डाल देने के लिए कहा। राजा के फैसले पर असली मधुसूदन भयभीत हो उठा। तभी आकाशवाणी हुई- 'मधुसूदन तूने संगीता के माता-पिता की बात नहीं मानी और बुधवार के दिन अपनी ससुराल से प्रस्थान किया। यह सब भगवान बुधदेव के प्रकोप से हो रहा है।'

मधुसूदन ने भगवान बुधदेव से प्रार्थना की कि 'हे भगवान बुधदेव मुझे क्षमा कर दीजिए। मुझसे बहुत बडी गलती हुई। भविष्य में अब कभी बुधवार के दिन यात्रा नहीं करूंगा और सदैव बुधवार को आपका व्रत किया करूंगा' मधुसूदन के प्रार्थना करने से भगवान बुधदेव ने उसे क्षमा कर दिया। तभी दूसरा व्यक्ति राजा के सामने से गायब हो गया। राजा और दूसरे लोग इस चमत्कार को देख हैरान हो गए। भगवान बुधदेव की इस अनुकम्पा से राजा ने मधुसूदन और उसकी पत्नी को सम्मानपूर्वक विदा किया। कुछ दूर चलने पर रास्ते में उन्हें बैलगाडी मिल गई। बैलगाडी का टूटा हुआ पहिया भी जुडा हुआ था।

दोनों उसमें बैठकर समतापुर की ओर चल दिए। मधुसूदन और उसकी पत्नी संगीता दोनों बुधवार को व्रत करते हुए आनंदपूर्वक जीवन-यापन करने लगे। इस तरह भगवान बुधदेव की कृपा से उनके यहां खुशियां बरसने लगीं।

आइये जाने मां दुर्गा की उत्पत्ति की कहानी

हिंदू धर्म में मां दुर्गा की आराधना के लिए विशेष रूप से नवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है। इस त्यौहार को साल में दो बार मनाया जाता है। मां दुर्गा को कई नामों जैसे- काली, पार्वती, गौरी, सती, महामाया और महिषासुर मर्दिनी के नाम से जाना जाता है। मां दुर्गा के रूप पार्वती को भगवान शिव की अर्धांगनी माना जाता है। मां दुर्गा की उत्पत्ति की गाथा कुछ इस प्रकार है: नवरात्री में आरती की थाली ऐसे सजाएं।

एक बार की बात है, एक भैंसा दानव था, जिसे महिषासुर के नाम से जाना जाता था, जो बडा शक्तिशाली था। वह सभी देवताओं का वध करना चाहता था, ताकि वह संसार में सर्वोच्च हो सकें। इससे घबराकर सभी देवता, सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रहम् के पास गए और अपनी बात कही। तब सभी ने सर्वसम्मत्ति से अपनी शक्तियों से मिलाकर देवी दुर्गा का सृजन किया। देवी दुर्गा का सृजन सभी की शक्तियों को मिलाने से ही संभव था ताकि महिषासुर का वध किया जा सकें। मां देवी दुर्गा का स्वरूप, बेहद आकर्षक है, उनके मुख में सौम्यता और स्नेह झलकता है। उनके दस हाथ हैं, जिसमें हर एक में एक विशेष शस्त्र है। उन्हे हर भगवान और देवता ने कुछ न कुछ अवश्य दिया था, भगवान शिव ने त्रिशुल, भगवान विष्णु ने चक्र, भगवान वायु ने तीर आदि।

देखिये दुर्गा पूजा की बेहतरीन तस्वीरे मां के कपडे और सवारी: मां दुर्गा की सवारी शेर है, जो हिमावंत पर्वत से लाया गया था। इस प्रकार देवी दुर्गा को महिषासुर का वध करने के लिए बनाया गया। बाद में देवी दुर्गा ने महिषासुर को मार डाला।

इस स्वरूप को आप अक्सर तस्वीरों और मूर्तियों में देख सकते हैं। महिषासुर को देवी दुर्गा ने अपने शेर और शस्त्रों से मार डाला। इस प्रकार मां दुर्गा, आज भी बुरी बाधाओं का वध करने के लिए पूजी जाती हैं। साल में चैत्र माह की नवरात्रि मुख्य होती है।

बालों में फूलों का गजरा लगाने का महत्व

भारत में आपको लडकियां और महिलाएं अपने बालों में फूल लगाएं जरुर मिल जाएंगी। खासतौर पर दक्षिण भारत में आपको हर लडकी बालों में एक या फूलों का गजरा लगाए दिख जाएगी। रंग बिरंगे फूल बालों को देखने में खूबसूरत ही नहीं बलकि हर फूल की अपनी अगल-अलग परिभाषा होती है। उनके पीछे जरुर कोई मतलब छुपा होता है। हर फूल किसी ना किसी गुण से जुडा होता है। चाहे बात करें चमेली, गुलाबी, गुलदाउदी या गुलाब आदि फूलों की, इस सब में कोई ना कोई राज छुपा होता है। माना जाता है कि अगर घर की लडकी या महिलाएं इन फूलों को सिर में लगाएं तो घर में खुशहाली आती है। आइये जानते हैं इन फूलों के पीछे छुपे हुए राज को।

बालों में फूलों का गजरा लगाने का महत्व

1. चमेली : चमेली अपनी खुशबू की वजह से फूलों की रानी के रूप में जानी जाती है। कोई त्योहार चमेली के फूल का उपयोग किए बिना पूरा नहीं समझा जाता है। यह समृद्धि और सौभाग्य का एक निशान है। इसलिए महिलाओं को आमतौर पर बालों पर चमेली के फूलों का गजरा पहने हुए देखा जाता है।

2. गुलाब: गुलाब प्यार और जुनून का प्रतीक है। तो अगर कोई लडकी गुलाब का फूल बालों में लगाती है, तो इसका मतलब होता है कि वह या तो अपने प्यार को याद कर रही होती है या फिर प्यार के जुनून को दिखा रही है।

3. गुलदाउदी: ये सुंदर से फूल खुशी को दर्शाते हैं। अगर एक लडकी बालों में गुलदाउदी पहनती है, तो वह अपने परिवार के लिए खुशी लाने के लिए सोंचती है।

4. गुडहर: यह फूल शक्ति का प्रतीक है इसलिये इससे काली देवी और अन्य रूपों की पूजा में प्रयोग किया जाता है।

फूलों का महत्व:फूलों का महत्व काफी प्राचीन है। भारत की हर संस्कृति में अलग अलग महिलाओं के लिये इन फूलों का महत्व एक दम जुदा है। भारत में लडकी का बालों में फूलों का गजरा लगाना उसके परिवार में खुशी और समृद्धि लाने से जोडा जाता है। माना जाता है कि फूल सुख-समृद्धि लाने में लगाने से मां लक्ष्मी घर में निवास करती हैं और वह घर को छोड कर कभी नहीं जाएंगी।

फेंगशुई प्रोडक्ट से जगा सकते हैं सोई किस्मत

फेंगशुई प्रोडक्ट घर में काफी सहायक हैं, लेकिन इन प्रोडक्ट्स का प्रयोग करते समय दिल और दिमाग में इसके प्रति आस्था रखनी आवश्यक है, तभी यह मनोवांछित फल देते हैं। आज घर-घर में पाए जाने वाले लाफिंग बुद्धा, मनी प्लांट आदि फेंगशुई की ही देन है। फेंगशुई के जानकार मानते हैं कि यह वस्तुएं आपकी सोई किस्मत को जगाकर आपको खुशहाल बना सकती हैं। हालांकि, कई जगह इन सामानों को भारतीय ज्योतिष से भी जोड कर देखा जाता है। जैसे कछुआ ना सिर्फ फेंगशुई में विशेष महत्व रखता है बल्कि ज्योतिष में भी इसका बेहद महत्व है। मान्यता है कि श्रीहरि विष्णु ने भी कछुआ रूप धारण कर समुद्र-मंथन के समय संसार की सहायता की थी। इसी तरह हाथियों को फेंगशुई के साथ भारतीय ज्योतिष में भी पुण्यकारी और लाभ देने वाला बताया गया है। फेंगशुई के सकारात्मक प्रभाव देखने के लिए इसमें विश्वास होना बेहद जरूरी है।

अगर विश्वास है तो तुच्छ माने जाने वाले बांस के पौधे भी आपके घर में पैसों की बारिश करा सकते हैं। फेंगशुई में मछलियों का महत्व होता है। मान्यता है कि मछलियां धन और समृद्धि लेकर आती हैं। मछलियों की उछलकूद देखने से मन को शांति मिलती है और यह अपने साथ सारे अपशकुन लेकर चली जाती हैं। हालांकि, इसे रखने के लिए विशेष देखभाल की जरूरत होती है। फेंगशुई के अनुसार घर में अगर जिंदा मछलियां रखनी हो तो आठ सुनहरी और एक काली मछली को मछलीघर में रखना चाहिए और अगर जगह की कमी हो तो आप दो मछलियों को रख सकते हैं। एक्वेरियम को रखने के भी कुछ नियम हैं जैसे इसे दरवाजे के पास या ठीक दरवाजे के सामने नहीं रखना चाहिए। इसे घर की उत्तर, पूर्व या उत्तर पूर्व दिशा में रखना चाहिए। अगर कोई मछली मर जाती है तो यह अपशकुन नहीं है, यह संदेश होता है कि मछली घर पर आने वाली आपदा को अपने साथ लेकर चली गई। अगर घर में बडा एक्वेरियम रखने की जगह ना हो तो आप छोटा सा एक्वेरियम दो मछलियों वाला भी रख सकते हैं। यह प्यार का प्रतीक माना जाता है। साथ ही आप क्रिस्टल की बनावटी मछलियों का जोडा बेडरूम में रख सकते हैं। गोल्डफिश को फेंगशुई के अनुसार सबसे अधिक पवित्र और संपन्नाता देने वाला माना जाता है। सोने की प्रतीत होने वाली यह मछली आपके जीवन में भी सोने की चमक बिखेर देगी। फेंगशुई एरोवाना मछली सबसे शुभ मछली माना जाता है। मान्यता है कि यह मछली अच्छे स्वास्थ्य, समृद्धि, सुख, धन और शक्ति का प्रतीक है। फेंगशुई के अनुसार एरोवाना मछली बुरी शक्तियों को हटाती है। अगर आप जिंदा एरोवाना मछली ना पाल पाएं तो आपको मुंह में सिक्का लिए हुए सुनहरी एरोवाना मछली की मूर्ति रखनी चाहिए।

मान्यता है कि इस नींबू को अपने पास रखने वाले को समृद्धि मिलती

तमिलनाडु के विलुपुरम जिले में मंदिर प्रशासन ने एक पवित्र नींबू की नीलामी की। पांगुनी उतिराम त्योहार की एक रस्म के तहत की गई इस नीलामी में एक दंपती ने इसे 39,000 रुपए में खरीदा। तिरुवन्नैनल्लुर के बालातंडेउतपनी मंदिर में 11 दिनों तक उत्सव होता है। इसके आखिरी दिन भगवान मुरुगन के भाले पर लटकाए गए फलों को नीलाम करने की परंपरा है। गांव वालों की ऐसी मान्यता है कि इस नींबू को अपने पास रखने वाले को समृद्धि मिलती है और जिस दंपती के पास यह फल होता है, उन्हें संतान सुख मिलता है। इस साल दंपती जयरामन और अमरावती ने 39,000 रुपए देकर 'पवित्र' नींबू खरीद लिया। बाकी के आठ नींबू भी अच्छे दामों में बिके। कुल मिलाकर नौ नींबू 57 हजार 722 रुपए में बिके। गांव के एक बुजुर्ग ने बताया कि किसी को नहीं पता कि यह मंदिर कब बनाया गया था। मंदिर उस जगह पर बना है, जहां दो पहाडियां मिलती हैं। काफी समय बाद गांव वालों का ध्यान इस मंदिर पर गया।

जब अकबर ने ली भगवान की परीक्षा, यह चमत्कार देख मान ली हार

शूरवीर और शहंशाह भी ईश्वर की शक्ति को नमन करते हैं। ऐसा ही एक बार अकबर के जीवन में भी हुआ था और उसने जगदीश महाराज के दरबार में शीश झुकाया। आगरा से अजमेर में ख्वाजा साहब की जियारत के जाते समय बादशाह अकबर जब गोनेर के पास से गुजरा तो लोगों ने लक्ष्मी जगदीश महाराज की प्रसिद्धि के बारे में बताया। बादशाह ने भगवान की परीक्षा लेने की सोची और गोनेर की ओर कूच किया।

उसने कहा कि यदि बिना मांगे मुझे मनचाहा प्रसाद एवं दर्शन हो जाएंगे तो मैं मान जाऊंगा, नहीं तो मंदिर को तोड दूंगा। उधर भगवान ने बादशाह की मंशा भांपकर अपने सेवक देवादास को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि एक भक्त मेरी परीक्षा लेने आ रहा है। उसे बिना मांगे प्रसाद में घेवर देना और पंच पीर के दर्शन करवा देना। इस पर देवादास ने कहा कि भगवान हां तो किसी को घेवर बनाने भी नहीं आते। कैसे प्रसाद दूंगा इस पर भगवान ने कहा, तू चिंता मत कर, सब प्रबंध हो जाएगा। जब अकबर गोनेर मंदिर पहुंचा तो सेवक देवादस ने बिना मांगे घेवर का प्रसाद देकर बादशाह को मंदिर में पंचपीर के दर्शन करा दिए। इससे बादशाह बहुत प्रभावित हुआ। उसने मंदिर में भगवान के दर्शन किए और शीश नवाया। तब से होली के दिन से भगवान को मालपुए एवं अन्य मिष्ठानों का भोग नहीं लगाया जाता। फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा से पांच दिन लक्ष्मी जगदीश महाराज के केवल घेवर का ही भोग लगता है। रंगपंचमी के दिन भगवान को गर्भगृह से बाहार लाते हैं और गर्भगृह सहित पूरे मंदिर का शुद्धिकरण किया जाता है।

इस अवसर पर भगवान जगदीश, चारभुजानाथ, बिहारीजी की मनोहरी फाल्गुनी पोशाक धारण करवा कर झांकी सजाई जाएगी।

लक्ष्मी जगदीश का मेला गोनेर स्थित श्री लक्ष्मी जगदीश भगवान का प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल दूज पर लगने वाला वार्षिक लक्खी मेला शुक्रवार को आयोजित होगा। मंदिर के महंत हनुमान दास शर्मा एवं सुरेंद्र शर्मा ने बताया कि इस मेले में प्रदेशभर से श्रद्धालु आएंगे।

सम्मान और यश प्राप्ति की अभिलाषा प्रत्येक मनुष्य में होती है

सम्मान और यश प्राप्ति की अभिलाषा प्रत्येक मनुष्य में होती है, किंतु जिन कार्यों से सम्मान मिलना संभव होता है उन्हें करने के लिए बहुत कम लोग राजी होते हैं। झूठे सम्मान के लोभी मनुष्यों को अथक प्रयास करने पर भी असफलता ही हाथ लगती है। जिस योग्यता पर यश मिलता और सम्मान बढता है उसे बढाया न जाए तो यह महत्वाकांक्षा अधूरी ही बनी रहेगी।

उचित योग्यता के अभाव में क्या किसी को सम्मान मिला भी है। योग्यता विलक्षणता, परिश्रम और अभ्यास से मिलती है। इसके लिए सबसे पहले अतुलनीय साहस उत्पन्न करना पडता है। साहस के बगैर वह शक्ति नहीं आती जो विपन्न स्थिति में धैर्य स्थिर रख सके। सवरेपरि स्थान प्राप्त करने के लिए घोर संघर्ष का सामना किए बिना कोई बच नहीं सकता। साहस से सहिष्णुता आती है, जिससे लोग हंसते हुए उन कठिनाइयों को डेाल जाते हैं। जब इस तरह का विशाल हृदय मनुष्य का बन जाता है तो यश स्वयं चलकर आपके पास आ जाता है।

कर्तव्य-बुद्धि का परिष्कारक ही गुणों की पराकाष्ठा तक पहुंच सकता है। यश का लोभ कामना-पूर्ति में विलंब होते या विघ्न आते देखकर बीच में ही गिरा देता है, इसलिए उसे त्याज्य कहा गया है। यश की अभिलाषा आंतरिक हो और किसी आदर्श पर प्रतिरोपित हो तो ही मनुष्य कठिनाइयों के उच्च शिखर पर चढता चला जाता है। श्रेष्ठता प्राप्त करने का अभ्यास आवेश या अंधानुकरण पर आधारित न हो अन्यथा अधिक देर तक उस सत्कर्म में टिके रहना संभव न होगा। विचार करें कि अपनी प्रकृति, स्थिति और शक्ति के अनुसार कौन-सी विशेषता सहज ही में प्रकट कर सकेंगे। दान, सेवा, भक्ति, चरित्र की निर्मलता, ब्रहाचर्य आदि का चयन अपनी स्थिति को ध्यान में रखकर करें।

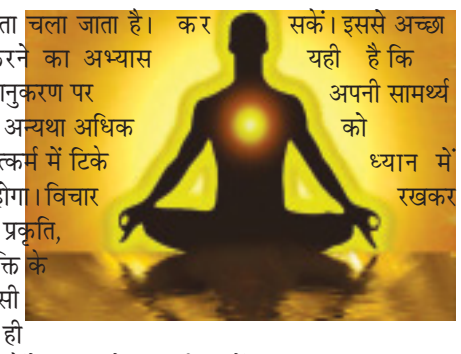

विपरीत स्थिति और शक्ति से बढकर किए गए प्रयास प्राय: निष्फल होते हैं या फिर साहस इतना बुलंद हो कि प्रत्येक स्थिति की कठोरता को अंत तक सहन कर सकें। इससे अच्छा यही है कि अपनी सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही गुणों का रचनात्मक विकास करें। सामान्य स्तर के व्यक्ति के लिए भी जीवन में सम्मान प्राप्त करने का एक सीधा सच्चा उपाय है। वह है वैर-भाव, ईर्ष्या-द्वेष और प्रतिशोध की भावना न रखना। सबके साथ प्रेम, दया, करुणा और सहदयता से रहकर यह स्थिति प्राप्त की जा सकती है।